# केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
# Central Board of Secondary Education

टिप्पणी एवं आदेश / Notes & Orders Page No.:-_____

क्र॰ सं॰: केमोशिबो/सतर्कता/2023/ दिनांक : 27.12.2023

**विषय: राजभाषा हिन्दी के प्रोत्साहन स्वरूप 'रामप्रसाद बिस्मिल' की पुण्य तिथि के अवसर पर सतर्कता अनुभाग में आयोजित गतिविधि के संबंध में ।**

उपरोक्त विषयांतर्गत राजभाषा हिन्दी के प्रोत्साहन स्वरूप सतर्कता अनुभाग में **'रामप्रसाद बिस्मिल'** की पुण्य तिथि (19 दिसम्बर, 1927) के अवसर पर दिनांक 27.12.2023 को रामप्रसाद बिस्मिल की जीवनी पर चर्चा करते हुए निम्नलिखित तथ्य प्रस्तुत किए गए :-

*रामप्रसाद बिस्मिल (11 जून 1897 – 19 दिसम्बर 1927) भारत के महान क्रांतिकारी थे जिन्होंने मैनपुरी और काकोरी जैसे कांड में शामिल होकर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध बिगुल फूंका था ।*

*रामप्रसाद बिस्मिल भारत के महान क्रांतिकारी व अग्रणी स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ साथ उच्च कोटी के कवि, शायर व साहित्यकार भी थे । आपने भारत की आजादी के लिए अपने प्राणो की आहुति दे दी । 11 जून 1897 को उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर में जन्मे रामप्रसाद बिस्मिल को 30 वर्ष की आयु में 19 दिसम्बर 1927 को ब्रिटिश सरकार ने गोरखपुर जाईल में फाँसी दे दी।*

*'बिस्मिल' आपका तखल्लुस था । बिस्मिल के अतिरिकत आप राम और अज्ञात के नाम से भी लेख और कविताएँ लिखते रहे। आपके लेखन को सर्वाधिक लोकप्रियता बिस्मिल के नाम से मिली थी । आपने अपने ग्यारह वर्ष के क्रांतिकारी जीवन में कई पुस्तकें लिखी जिनमें से ग्यारह आपके जीवन काल में प्रकाशित हुई थीं जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने जब्त कर लिया था ।*

इस संदर्भ में निम्नलिखित कर्मचारियों द्वारा कविता लेखन गतिविधि में भाग लिया गया :-

| क्र०सं० | नाम | पदनाम | आयोजित की गई गतिविधि |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री सतीश चन्द्र शर्मा | अधीक्षक | **'देश की खातिर'** – कविता लेखन |
| 2. | श्री अजय जैन | अधीक्षक | **'यदि देश के हित मरना पड़े'** – कविता लेखन |
| 3. | श्रीमती इशू क्वात्रा | अधीक्षक | **'हे मातृभूमि'** – कविता लेखन |
| 4. | श्रीमती शिवानी झा | निजी सचिव | **'रामप्रसाद बिस्मिल का अंतिम पत्र** – कविता लेखन |
| 5. | श्री अर्जुन कुमार | एम. टी. ए. | **'जननी जन्मभूमि'** – कविता लेखन |
| 6. | श्री ओंकार सिंह | एम. टी. एस. | **'ऐ मातृभूमि'** – कविता लेखन |

सतर्कता अनुभाग में आयोजित की गईं उपरोक्त गतिविधि की लिखित प्रति संलग्न हैं ।

मुख्य सतर्कता अधिकारी

अवर सचिव (हिन्दी)

# देश की खातिर (काव्य)

देश की खातिर मेरी दुनियाँ में यह तामीर हो।
हाथ में हो हथकड़ी, पैरों पड़ी जंजीर हो॥

शूली मिले फाँसी मिले या कोई भी तदबीर हो।
पेट में खंजर दुधारा या जिगर में तीर हो॥

आँख खातिर तीर हो मिलती गले शमशीर हो।
मौत की रखी हुई आगे मेरे तस्वीर हो॥

मर कर भी मेरी जान पर जहमत बिला तासीर हो।
और गर्दन पर धरी जल्लाद ने शमशीर हो॥

खासकर मेरे लिये दोज़ख नया तामीर हो।
अलगरज़ जो कुछ हो मुमकिन वह मेरी तहकीर हो॥

हो भयानक से भयानक भी मेरा आखीर हो।
देश की सेवा ही लेकिन एक मेरी तकशीर हो॥

इससे बढ़कर और दुनियाँ में अगर ताजीर हो।
मंजूर हो! मंजूर हो!! मंजूर हो!!! मंजूर हो!!!!

मैं कहूँगा फिर भी अपने देश का शैदा हूँ मैं।
फिर करूँगा काम दुनिया में अगर पैदा हुआ॥

सतीश चन्द्र शर्मा
अधीक्षक
सतर्कता अनुभाग

# **** यदि देश के हित मरना पड़े (काव्य) ****

यदि देश के हित मरना पड़े, मुझको सहस्त्रों बार भी,
तो भी न मैं इस कष्ट को, निज ध्यान में लाऊं कभी।
हे ईश! भारतवर्ष में, शत बार मेरा जन्म हो,
कारण सदा ही मृत्यु का, देशोपकारक कर्म हो॥

मरते 'बिस्मिल' रोशन, लाहिड़ी, अशफाक अत्याचार से,
होंगे पैदा सैंकड़ों, उनके रुधिर की धार से॥
उनके प्रबल उद्योग से, उद्धार होगा देश का,
तब नाश होगा सर्वदा, दुख शोक के लव लेश का॥

अजय जैन
अध्यक्ष
सतर्कता शाखा

# हे मातृभूमि (काव्य)

हे मातृभूमि! तेरे चरणों में सिर नवाऊँ।
मैं भक्ति भेंट अपनी, तेरी शरण में लाऊँ॥

माथे पे तू हो चंदन, छाती पे तू हो माला,
जिह्वा पे गीत तू हो, तेरा ही नाम गाऊँ॥

जिससे सपूत उपजें, श्री राम-कृष्ण जैसे,
उस धूल को मैं तेरी निज शीश पे चढ़ाऊँ॥

माई समुद्र जिसकी पदरज को नित्य धोकर,
करता प्रणाम तुझको, मैं वे चरण दबाऊँ॥

सेवा में तेरी माता! मैं भेदभाव तजकर;
वह पुण्य नाम तेरा, प्रतिदिन सुनूँ-सुनाऊँ॥

तेरे ही काम आऊँ, तेरा ही मंत्र गाऊँ।
मन और देह तुझ पर बलिदान मैं जाऊँ॥

ईश्वर कवाना
1564.
अधीक्षक
सतर्कता विभाग

# राम प्रसाद बिस्मिल का अंतिम पत्र (विविध

———x———x———x———x———x———

शहीद होने एक दिन पूर्व रामप्रसाद बिस्मिल ने अपने एक मित्र को निम्न पत्र लिखा :–

"19 तारीख को जो कुछ होगा मैं उसके लिए सहर्ष तैयार हूं। आत्मा अमर है जो मनुष्य की तरह वस्त्र धारण किया करती है।"

यदि देश के हित मरना पड़े, मुझको सहस्रो बार भी,<br>
तो भी न मैं इस कष्ट को, निज ध्यान में लाऊं कभी।<br>
हे ईश! भारतवर्ष में, शत बार मेरा जन्म हो,<br>
कारण सदा ही मृत्यु का, देशोपकारक कर्म हो।<br>
मरते हैं 'बिस्मिल' रोशन, लाहिड़ी, अशफाक अत्याचार से,<br>
होंगे पैदा सैंकड़ों, उनके रुधिर की धार से –<br>
उनके प्रबल उद्योग से, उद्धार होगा देश का,<br>
तब नाश होगा सर्वदा दुख शोक के लवलेश का।<br>
सब से मेरा नमस्कार कहिए,

तुम्हारा

'बिस्मिल'

रामप्रसाद बिस्मिल की शायरी, जो उन्होंने कालकोठरी में लिखी या गई थी, उसका एक-एक शब्द आज भी भारतीय जनमानस पर उतना ही असर रखता है जितना उन दिनो रखता था। उनकी शायरी का हर शब्द अमर है।

शिवानी झा<br>
निजी सहायक<br>
सतर्कता अनुभाग

# जननी जन्मभूमि (काव्य)

हाय! जननी जन्मभूमि छोड़कर जाते हैं हम,
देखना है फिर यहाँ कब लौट कर आते हैं हम।
स्वर्ग के सुख से भी ज्यादा सुख मिला हमको यहाँ,
इसलिए जताते इसे, हर बार शर्माते हैं हम।
ऐ नदी-नालों! दरख्तों! पक्षियों! मेरा कसूर,
माफ करना, जोड़ कर तुमसे फर्माते हैं हम।
माँ! तुझे इस जन्म में कुछ सुख न दे पाए कभी,
फिर जन्म लेंगे यहीं, यह कौल कर जाते हैं हम।

(बिस्मिल ने उपरोक्त पंक्तियाँ, उन्होंने 'जननी जन्मभूमि' के प्रेम में सराबोर होकर फाँसी की कोठरी में लिखी थी।)

अर्जुन कुमार
एम॰टी॰ए॰
सतर्कता शाखा

# ऐ मातृभूमि

ऐ मातृभूमि! तेरी जय हो, सदा विजय हो।
प्रत्येक भक्त तेरा, सुख-शांति-कीर्तिमय हो॥

अज्ञान की निशा में, दुख से भरी दिशा में,
संसार के हृदय में तेरी प्रभा उदय हो।

तेरा प्रकोप सारे जग का महाप्रलय हो।
तेरी प्रसन्नता ही आनंद का विषय हो॥

वह भक्ति दे कि बिस्मिल सुख में तुझे न भूलें,
वह शक्ति दे कि दुख में कायर न यह हृदय हो॥

नाम - ओमकार सिंह
पद - एम० टी० एस
शाखा - सतकीता